SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-3, खण्ड-1, जनवरी - मार्च 2025 E-ISSN : 2584-2900

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा : वर्तमान परिपेक्ष्य में

गुंजन निगम
शोधार्थी (इतिहास विभाग)
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

भारत में प्राचीन काल से ही नारी की पूजा की जाती रही है हमारे वेद पुराण भागवत गीता एवं अन्य वैदिक ग्रन्थ महिलाओ की महिमा का गुणगान करते रहे है -

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'

अर्थात् नारी की पूजा जहाँ होती है वहीं देवताओ का भी निवास होता है। जो महिला बचपन से लेकर जीवनपर्यन्त त्याग का प्रतिमान स्थापित करती है वहीं माँ बेटी वहन समय काल और परिस्थितियों के दायरे में बंधकर अपने अस्तित्व खोती जा रही थी, फिर आधुनिक काल में जिसकी आर्थिक रूप रेखा अर्थ से आंतरिक रूप से जुड़ी है। तब महिलाओं की शक्ति को पुनः महसूस किया गया और उनके सशक्तिकरण के बिना किसी देश का विकास सम्भव नहीं होगा। क्योंकि आधी आबादी अगर अशिक्षित और शक्तिहीन कौशल से विहीन रहेंगी तो देश के विकास की सम्भावना ही नहीं भारत में भी महिलाओं को सामाजिक आर्थिक राजनीतिक धार्मिक रूप से सशक्त करने की मुहिम चलायी जा रही है।

बीज शब्द

महिला सशक्तिकरण, विकास, अधिकार, शिक्षा, भागीदारी, समानता।

शोध विस्तार

महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया से है, जिसमें महिलाओं के लिए सर्वसम्पन्न और विकसित होने के नए-नए विकल्प तैयार किए गए, जिसमें महिलायें समाज के

लगभग आधे भाग का प्रतिनिधित्व करती है समाज में महिलाओं की भागीदारी महिला सशक्तिकरण के लिए हो रहे प्रयासों का प्रमुख घटक है। महिला सशक्तिकरण से अभिप्राय महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी रूप से आत्म-निर्भर बनाने से है, ताकि वे अपने अधिकारों का सही समय पर सदुपयोग कर सके, और समाज में समानता का अधिकार प्राप्त कर सके। वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है, क्योंकि यह केवल एक लिंग आधारित मुदा नहीं बल्कि एक समग्र का प्रश्न बन चुका है। इस शोध पत्र में महिला सशक्तिकरण के निम्नलिखित आयामों में दृष्टि डालना चाहेंगे। सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अधिकार अवसर और सुविधाएं प्रदान करना है, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सके। शहरी क्षेत्रों में सामाजिक सशक्तिकरण का महत्व बढ़ गया है क्योंकि यहाँ शिक्षा रोजगार, स्वास्थ्य सुविधाओं और आधुनिक संसाधनों की अधिकता होती है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत ऊँचा है, लेकिन अभी भी वंचित वर्गों तक उच्च गुणवत्ता की शिक्षा पहुँचाने की आवश्यकता है। वही दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार कई योजनाएं चला रही है। जिससे महिलायें उन योजनाओं से लाभान्वित हो सके। और अधिकारों का सदुपयोग कर सकें। वहीं दूसरी ओर महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उनको स्वरोजगार और उद्यमिता योजनाओं के तहत ऋण देकर महिलाओं को स्वारोजगार के लिए प्रेरित किया जा रहा है। हालांकि महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ है फिर भी कई चुनौतियाँ बनी हुई है। शिक्षा, वेतन, सम्पति के अधिकार और कार्यस्थल पर भेदभाव। बाल विवाह, दहेज प्रथा और घरेलू हिंसा। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी महिलाओं के लिए स्वरोजगार और वित्तीय स्वतंत्रता की कमी है। उच्च स्तर की राजनीति में महिलाओं की सीमित भागीदारी है। महिलाओं कीशिक्षा और कौशल विकास में डिजिटल साक्षरता की कमी है। महिला सशक्तिकरण को प्रभावी बनाने के लिए निम्निलिखित कदम उठाए जा सकते हैं। हर लड़की को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले और उच्चशिक्षा में उनकी अधिक से अधिक भागीदारी हो, महिला उधमियों को आसानी से ऋण सुविधा प्राप्त और कौशल विकास कार्यक्रम प्रदान किए जाएं। दहेज, घरेलू हिंसा, यौग उत्पीडन और अन्य अपराधों के खिलाफ त्वरित न्याय

सुनिश्चित किया जाए। सामाजिक जागरूकता के लिए लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए जागरूक अभियान चलाएँ जाएँ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए महिलाओं को डिजिटल शिक्षा एवं ऑनलाइन कार्य में भी प्रशिक्षित किया जाए।

निष्कर्ष

महिला सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक आंदोलन नहीं बल्कि राष्ट्रीय विकास का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। भारत में इस दिशा में कई सकारात्मक पहल हुई है। लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकि है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, ताकि वे अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग कर सके और समाज को समृद्ध बना सके।

सन्दर्भ ग्रंथसूची

1. भारत में महिला सशक्तिकरण-प्रो. सुभाषिनी सिंह
2. महिला अधिकार और कानूनी परिप्रेक्ष्य-डॉ. सीमा गुप्ता
3. नारीवाद और भारतीय समाज - मीरा त्रिपाठी
4. महिला सशक्तिकरण : चुनौतियों और सम्भावनाएँ - डॉ. ज्याति योनि मिश्रा
5. महिला उद्यमिता और आत्मनिर्भरता - डॉ. कविता वर्मा
6. भारतीय महिलाओं की स्थिति और सामाजिक परिवर्तनः डॉ वी.के. अग्रवाल।